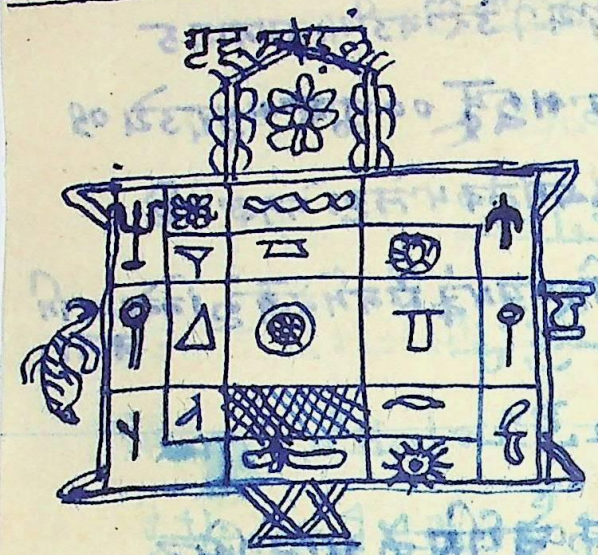


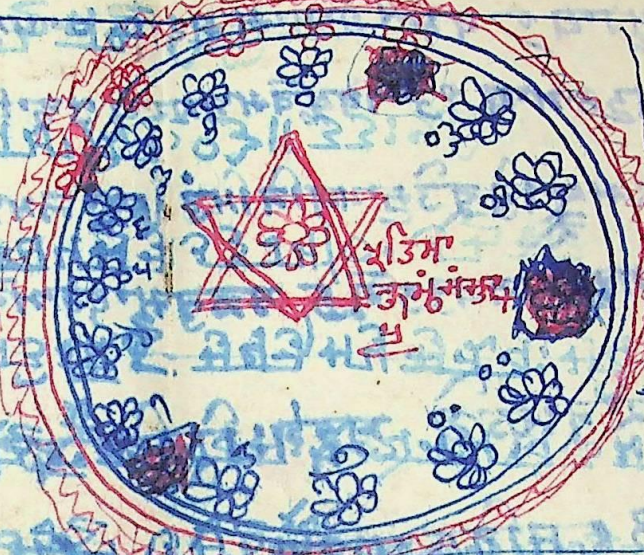
अथ संक्रान्ति वृत्तो ध्यापन विधिः॥

प्रपूज्यं चूर्णनं गृह मण्डलं लिख्य ॥ तद्वक्ष्ये त्रयोदश कलशान्मध्ये प्रतिमा कलशं
देव चतुष्टयी चो लिख्य ॥ घृतेन तिल तैले वा दीपान्दध्या त्रयोदश ॥



त्रयोदशकल्पमण्डलं ॥

वेदचतुष्टयी



क्षेत्रादयं दीयं

बुद्धकलमे ५० नं

मगयेतमः वयवे नमः भुदय नमः वृद्ध नमः पूरणयेनमः कृष्णसिद्धः
 गायत्रे नमः त्रिकुचः सुः उद्धिउ कविकं उद्धिउ म॥ उद्धिउ उवेरुमं॥ मिइनेवानं॥
 उद्धिउ कविकं॥ हंमः सुमिभडा॥ त्रि॥ निभुदमादिह भन्न यति उयः मंउ भसु कगति
 उद्धिउ उरुपं सुयेल्लेडि ग्नि भडा गवद्धिउ सुगमा॥ त्रि॥ हं हंमः भुदय नमः॥ डा
 उद्धिउः भुद भग्नल पूरणं॥ उद्धिउ उद्धिउ उवेरुमं॥ मयहडा३ मरु मरुमुकै३
 उद्धिउ विमु रजैउ हंम॥ उद्धिउ कविकं विमः॥ येन पवक शकमो विमुम
 विम शकमूष १ मयहडा दगिउ गवठ सुयउ मय सुनवः भुदे गवसु नपुः७
 उद्धिउ यनु भमभुगि हंमिउ विषयमु उद्धिउ गमा॥०० उद्धिउ नमु मिइमद ००
 मुकै धुमं०३ उद्धिउ गव यमादिह ०३॥ उद्धिउः पूडिमा कलमेष पूरणं
 भमै विषे यमदमा॥ उद्धिउ नमु विने कल॥ उद्धिउ उद्धिउ मिइमदि॥

~~कृष्णसिंह कृत कालिका पर्वत~~

भनः प्रुडिमा
 कलमेरु
 रने
 मदिडय मुहुट्टय म्दय० सीपु मदिडय गवे विम ३३ प्रकम मदिडय
 गठमुये ३ भगीशि मदिडय-ठनवे ९ उपनी मदिडय-मविडू ५ ममनी मदिड
 यदिव कगय ७ दवृवाड म-ण्मय १ उल्लेवडी म-उपनीय ५ मउरुम म-
 ठभुगय ७ वरुल णम म-म्दय ०० पम गठ म-इषू ०० काय म-मयउये ९
 महुठम मदिडय मरुगये नमः ॥

[illegible]

